प्राचीन सांगीतिक ग्रंथों में मूर्च्छना का स्वरूप

डॉ. मनीष डंगवाल
ऐसोसिएट प्रोफेसर व विभाग प्रभारी
संगीत विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
(श्रीदेवसुमन विश्वविद्यालय कैम्पस कॉलेज), गोपेश्वर, चमोली, उत्तराखण्ड

१. प्रस्तावना

प्राचीन भारतीय संगीत में रागों और स्वरों के बदलाव की प्रक्रिया को समझने में मूर्च्छना की महत्वपूर्ण भूमिका है। मूर्च्छना का उपयोग ग्राम और रागों के विविध स्वरूपों को उत्पन्न करने के लिए किया जाता था। मूर्च्छना का शाब्दिक अर्थ है ''स्वरांतर परिवर्तन'' या स्वरों का क्रमिक रूप से ऊपर या नीचे स्थानांतरण। यह स्वरों के क्रम को बदलकर नए राग या धुनों को उत्पन्न करने का एक प्राचीन प्रणाली थी। यह प्रणाली भारतीय संगीत के प्रारंभिक काल में रागों और धुनों के निर्माण और विकास का आधार थी। मूर्च्छना का सीधा संबंध ग्राम (षड्जग्राम, मध्यमग्राम) से है। यह ग्राम के स्वरों का स्थानांतरण करके नए स्वरों और रागों का निर्माण करती थी। उदाहरण के लिए, यदि किसी ग्राम में स्वरों का स्थानांतरण किया जाता है, तो एक नई मूर्च्छना उत्पन्न होती है, जिससे एक नए राग का विकास होता है।

भारतीय संगीत में राग गायन–वादन का प्रचार–प्रसार बहुत समय पश्चात् प्रारम्भ हुआ। 'राग' के प्रचार से पूर्व भारतीय संगीत में 'जाति' व 'मूर्च्छना' का गायन–वादन किया जाता था। यद्यपि प्राचीन कालीन संगीत में सप्त स्वरों पर ही आधारित 'ग्राम' भी विद्यमान था किन्तु इस का गायन नहीं किया जाता था। संगीत में इसका प्रयोजन, मात्र विभिन्न स्वरावलियाँ प्राप्त करना था। इन भिन्न–भिन्न स्वरावलियों को ही 'मूर्च्छना' कहा जाता है तथा तत्कालीन संगीत इन्हीं पर आश्रित था।

२.मूर्च्छना

'मूर्च्छना' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा की 'मूर्च्छ' धातु में 'णिच्' प्रत्यय लगाने से हुई है जिसका तात्पर्य है – मूर्च्छित होना, मोहित होना या भ्रमित होना। संगीत में **'मूर्च्छना'** का तात्पर्य सप्त स्वरों के क्रमानुसार आरोह तथा अवरोह करने की क्रिया को कहा जाता है। संगीत में 'मूर्च्छना' का उद्‌देश्य बताते हुए विद्वानों ने कहा है कि नाद से श्रुति, श्रुति से स्वर, स्वर से ग्राम, ग्राम से मूर्च्छना तथा मूर्च्छना से जातियों की उत्पत्ति होती है। कुछ विद्वानों के मतानुसार इन्हीं जातियों से कालान्तर में 'राग' की उत्पत्ति हुई जिनका आधुनिक भारतीय संगीत में भी प्रचार है।

३.नारदीय शिक्षा में मूर्च्छना उल्लेख

परवर्ती आचार्यो के मतों की पृष्ठभूमि पर, नारदीय शिक्षा ग्रन्थ में वर्णित 'मूर्च्छना' विषयक उल्लेखों का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि 'ग्राम' के समान ही नारदीय शिक्षा में मूर्च्छना से सम्बद्ध विभिन्न तथ्य, प्रारम्भिक अवस्था में विद्यमान हैं तथापि तत्कालीन संगीत जगत 'मूर्च्छना' गायन से भली–भाँति परिचित था। शिक्षाकार ने स्वर–मण्डल के अन्तर्गत तीन ग्रामों के साथ ही इक्कीस मूर्च्छनाओं का भी समावेश किया है।

नारदीय शिक्षा में मूर्च्छना की परिभाषा प्राप्त नहीं होती। शिक्षाकार ने सीधा मूर्च्छना का उल्लेख करते हुए तीन प्रकार की मूर्च्छना का वर्णन किया है– **देव मूर्च्छनाएँ, पितृ मूर्च्छनाएँ** तथा **ऋषि मूर्च्छनाएँ।** इन

तीन प्रकार की मूर्च्छनाओं में से प्रत्येक के अन्तर्गत सात मूर्च्छनाओं का उल्लेख किया गया है। शिक्षाकार ने स्वोल्लिखित तीन प्रकार की मूर्च्छनाओं के नाम इस प्रकार दिए हैं–

नन्दी विशाला सुमुखी चित्रा चित्रवती सुखा।
वला या चाथ विज्ञेया देवानां सप्त मूर्च्छनाः।।
आप्यायिनी विच्श्रभृता चन्द्रा हेमा कपर्दिनी।
मैत्री वार्हती चैव पितृणां सप्त मूर्च्छनाः।।
षड्जे तूत्तर मन्द्रा स्यादृभे चाभिरूद्गता।
अश्वक्रान्ता तु गान्धारे तृतीया मूर्च्छना स्मृता।।
मध्यमे खलु सौवीरा ह्रष्यका पञचमे स्वरे।
धैवते चापि विज्ञेया मूर्च्छना तूत्तरायता।।
निषादाद्रजनीं विद्यादृशीणां सप्त मूर्च्छनाः।

अर्थात् नन्दी, विशाला, सुमुखी, चित्रा, चित्रवती, सुखा तथा बला ये सात देव मूर्च्छनाएँ हैं। आप्यायनी, विच्श्रभृता, चन्द्रा, हेमा, कपर्दिनी, मैत्री तथा वार्हती सप्त पितृ मूर्च्छनाएँ हैं। षड्ज में उत्तरमन्द्रा, ऋषभ में अभिरूद्गता, गान्धार में अच्श्रक्रान्ता, मध्यम में सौवीरा, पंचम में ह्रष्यका, धैवत में उत्तरायता तथा निषाद में रजनी ऐसी सप्त ऋषि मूर्च्छनाएँ हैं। शिक्षाकार ने देव व पितृ मूर्च्छनाओं के स्वरों का उल्लेख नहीं किया है। ऋषि मूर्च्छनाओं के उल्लेख के अन्तर्गत 'स्यादृषभे' शब्द में प्रयुक्त हुआ है। सम्भवतः यह 'स्यादृषभे' शब्द है जिससे 'ऋषभ' स्वर की मूर्च्छना का संकेत प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त शिक्षाकार ने यह भी बताया है कि देव मूर्च्छनाओं का प्रयोग गन्धर्व जन, पितृ मूर्च्छनाओं का प्रयोग यक्ष गण तथा ऋषि मूर्च्छनाओं का प्रयोग लौकिक गायक करते हैं –

उपजीवन्ति गन्धर्वा देवानां सप्तमूर्च्छना।।
पितृणां मूर्च्छनयाः सप्त तथा यक्षा न संशयः।
ऋषीणां मूर्च्छनाः सप्त यास्त्विमा लौकिकाः स्मृताः।।

नारदीय शिक्षा के उपरोक्त, मूर्च्छना संबधी मतों का अध्ययन करने से अनेक तथ्य ज्ञात होते हैं। शिक्षाकार के परवर्ती कुछ विद्वानों के अनुसार देव, पितृ व ऋषि मूर्च्छनाएँ क्रमशः गान्धार, मध्यम व षड्ज ग्राम की मूर्च्छनाएँ हैं परंतु स्वयं शिक्षाकार ने ऐसा कोई संकेत नहीं दिया है। सर्वप्रथम, शिक्षाकारोक्त देव मूर्च्छनाओं का अध्ययन करने से अभास होता है कि ये मूर्च्छनाएँ गान्धार ग्राम की मूर्च्छनाएँ ही हैं। गान्धार ग्राम के विषय में शिक्षाकार का मत है कि यह ग्राम स्वर्ग के अतिरिक्त कहीं प्रचलित नहीं है तथा देव मूर्च्छनाओं के विषय में शिक्षाकार का मत है कि उनका गायन गन्धर्वो (स्वर्ग के गायक) द्वारा किया जाता है। इस प्रकार संकेत प्राप्त होता है कि देव मूर्च्छनाएँ, स्वर्ग में स्थित गान्धार ग्राम की मूर्च्छनाएँ हैं जिनका गान, स्वर्ग के गायकों–गन्धर्वो द्वारा किया जाता है।

४.नाट्यशास्त्र में मूर्च्छना उल्लेख

नाट्यशास्त्र ग्रंथ में मूर्च्छना की स्पष्ट परिभाषा प्राप्त नहीं होती तथापि इस ग्रंथ में भरत मुनि ने मूर्च्छना को, आंशिक रूप से परिभाषित कर दिया है –

क्रमयुक्ताः स्वराः सप्त मूर्छनेत्यभिसंज्ञिताः।

अर्थात् क्रम युक्त सप्त स्वरों को मूर्छना कहते हैं। इस परिभाषा से मूर्च्छना पूर्ण रूप से स्पष्ट नहीं होती तथापि भरत मुनि ने स्वोल्लिखित दोनों ग्रामों–षड्ज व मध्यम, की मूर्च्छनाओं पर विस्तृत चर्चा की है। भरत मुनि ने दो ग्रामों से कुल चौदह मूर्च्छनाएँ बताई हैं– '**अथ मूर्च्छनाः द्वैग्रामिक्यच्श्रतुर्दश।** इन चौदह मूर्च्छनाओं के नाम भरत मुनि ने इस प्रकार बताए हैं –

आदावुत्तरमन्द्रा स्याद्रजनी चोत्तरायता।
चतुर्थी शुद्धषड्जा तु पञचमी मत्सरीकृता।।
अश्रक्रान्ता तथा षष्ठी सप्तमी चाभिरूद्गता।।
षड्जग्रामाश्रिता ह्येता विज्ञेयाः सप्तमूर्च्छनाः।। इति।।
सौवीरी हरिणाच्श्रच स्यात्कलोपनता तथा।
शुद्धमध्या तथा मार्गी पौरवी ह्रष्यका तथा।

मध्यमग्रामजा ह्येता विज्ञेयाः सप्तमूर्च्छनाः।।

तात्पर्य यह कि षड्ज ग्राम पर आश्रित सात मूर्च्छनाएँ—उत्तरमन्द्रा, रजनी, उत्तरायता, शुद्धषड्जा, मत्सरीकृता, अश्रक्रान्ता तथा अभिरूद्गता हैं। इसी प्रकार मध्यम ग्राम से उत्पन्न सात मूर्च्छनाएँ—सौवीरी, हरिणाच्श्रा, कालोपनता, शुद्ध मध्या, मार्गी, पौरवी तथा हृष्यका हैं। भरत मुनि ने इन सभी द्वैग्रामिक मूर्च्छनाओं के आरम्भिक स्वरों का भी उल्लेख किया है जिनसे इन मूर्च्छनाओं का आरम्भ होता है। षड्ज ग्रामिक मूर्च्छनाओं के विषय में भरत का मत है –

आसो षड्जनिषादधैवतपञचममध्यमगान्धारर्षभा आनुपूर्व्या
आद्याः स्वराः। षड्जे चैत्तरमन्द्रा स्यादृषभे चाभिरूद्गता।
अश्वक्रान्ता तु गान्धारे मध्यमे मत्सरीकृता।।
पञचमे शुद्धषड्जा स्याद्धैवते चोत्तरायता।
निषादे रजनी च स्यादित्येताः षडजमूर्च्छनाः।।

तात्पर्य यह कि षड्ज ग्राम की मूर्च्छनाओं के आदि (प्रथम) स्वर षड्ज, निषाद, धैवत, पंचम, मध्यम, गान्धार तथा ऋषभ हैं। अर्थात् षडज में उत्तरामन्द्रा ऋषभ में अभिरूद्गता, गान्धार में अश्वक्रान्ता, मध्यम में मत्सरीकृता, पंचम में शुद्ध षड्जा, धैवत में उत्तरायता तथा निषाद में रजनी स्थित है, ऐसी षड्ज की मूर्च्छनाएँ हैं। इसी प्रकार मध्यम ग्राम की मूर्च्छनाओं के विषय में भरत मुनि का मत है –

आसां मध्यमगान्धारर्षभड्जनिषादधैवतपञचमा आनुपूर्व्या
आद्याः स्वराः। मध्यमेन सौवीरी, गान्धारेण हरिणाच्श्रा,
आर्षभेण कालोपनता, षड्जेन शुद्धमध्यमा, निषादने मार्गी,
धैवतेन पौरवी, पञचमेन हृष्यकेति।

तात्पर्य यह कि (मध्यम ग्राम की मूर्च्छनाओं में) मध्यम, गान्धार, ऋषभ, षड्ज, निषाद, धैवत तथा पंचम आदि (प्रारम्भिक) स्वर हैं। मध्यम से सौवीरी, गान्धार से हरिणाच्श्रा, ऋषभ से कलोपनता, षड्ज से शुद्ध मध्यमा (मध्या), निषाद से मार्गी, धैवत से पौरवी तथा पंचम से हृष्यका का आरम्भ होता है। भरतोक्त षड्ज व मध्यम ग्रामों के उपरोक्त कथनों को निम्न तालिकाओं के माध्यम से सहजता से समझा जा सकता है –

षड्ज ग्रामिक मूर्च्छना	**उत्तरमन्द्रा**	**रजनी**	**उत्तरायता**	**शुद्ध षड्जा**	**मत्सरीकृता**	**अच्श्रक्रान्ता**	**अभिरूद्गता**
आरम्भिक स्वर	षड्ज	निषाद	धैवत	पंचम	मध्यम	गान्धार	ऋषभ

मध्यम ग्रामिक मूर्च्छना	**सौवीरी**	**हरिणाच्श्रा**	**कलोपनता**	**शुद्ध मध्यमा**	**मार्गी**	**पौरवी**	**हृष्यका**
आरम्भिक स्वर	मध्यम	गान्धार	ऋषभ	षड्ज	निषाद	धैवत	पंचम

५.दत्तिलम् में मूर्च्छना उल्लेख

भरत मुनि के पश्चात् दत्तिल ने भी मूर्च्छना पर विस्तृत चर्चा की है परंतु उन्होंने भी मूर्च्छना को परिभाषित नहीं किया है। दत्तिल ने षड्ज ग्राम की मूर्च्छनाओं के सभी नाम भरत मुनि के समान ही वर्णित किए हैं। किन्तु मध्यम ग्रामिक मूर्च्छना—नाम के विषय में उनके तथा भरत मुनि के मत में कुछ अंतर दृष्टिगोचर होते हैं—

सौवीरी मध्यमग्रामे हरिणाश्वा तथैव च।
स्यात् कपोलनता चैव चतुर्थी शुद्धमध्यमा।।
मान्दी च पौरवी चैव हृष्यका च यथाक्रमम्।

यहाँ दत्तिल ने तृतीय मूर्च्छना का नाम 'कपोलनता' माना है जबकि भरत मुनि ने इसी मूर्च्छना को 'कलोपनता' कहा है। इसी प्रकार दत्तिल ने पांचवीं मूर्च्छना 'मान्दी' मानी है जबकि भरत मुनि ने उसी को 'मार्गी' नाम दिया है। शेष मूर्च्छना—नामों के विषय में दोनों ग्रन्थकारों के मतों में समानता है। दत्तिल ने स्वोल्लिखित मूर्च्छनाओं का स्वरूप वर्णन नहीं किया है। दत्तिल कृत 'दत्तिलम्' ग्रन्थ में, षड्ज ग्राम से मध्यम ग्राम की मूर्च्छनाएँ प्राप्त करने की विधि का विशिष्ट उल्लेख भी प्राप्त होता है—

गान्धारं धैवतीकुर्यात् द्विश्रुत्युत्कर्षणाद् यदि।

तद्वशान्मध्यमार्दीश्च निषादादीन् यथास्थितान्।।
ततोऽभूद् यावतिथ्येषा षड्जग्रामस्य मूर्छना।
जायते तावतिथ्येव मध्यमग्राम मूर्छना।।
श्रुतिद्वयापकर्षेण गान्धारीकृत्य धैवतम्।
पूर्ववन्मध्यमाद्याश्च भावयेत् षड्जमूर्छनाः।।
इत्येता मूर्छनाः प्रोक्ताः सारणाश्चैव वैणिकैः।

६.बृहदेशी में मूर्च्छना उल्लेख

दत्तिल के पश्चात् मतंग मुनि ने मूर्च्छना पर विषद् चर्चा की है। 'मूर्च्छना' शब्द की व्युत्पत्ति के विषय में मतंग मुनि का कथन है –

मूर्छनाव्युत्पत्तिः मूर्छ् मोहसमुच्छाययोः।

अर्थात् मूर्च्छना (शब्द) की व्युत्पत्ति 'मूर्छ् (धातु) से हुई है जिसका अर्थ है मोह को उत्पन्न करना या बढ़ाना। तत्पश्चात् उन्होंने संगीत में 'मूर्च्छना' की भूमिका या प्रयोजन को उल्लेख किया है –

मूर्छ्यते येन रागो कि मूर्छनेत्यभिसंज्ञिता।।

अर्थात् जिसके द्वारा 'राग' की उत्पत्ति या वृद्धि होती है वह मूर्च्छना कही जाती है। इस परिभाषा मे 'राग' शब्द रंजकता या शक्ति का सूचक है। यहाँ यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि साहित्य में 'राग' शब्द का अर्थ–मोह, अनुरक्ति या आसक्ति ही लिया जाता है जबकि संगीत में '**राग**' ऐसे विशिष्ट स्वर सन्निवेश को कहा जाता है जिसे सुनकर श्रोता मोहित, अनुरक्त या आसक्त हो जाता है तथा उसके मन का रंजन होता है। मतंग मुनि ने मूर्च्छना को परिभाषित करते हुए कहा है –

आरोहणावरोहणक्रमेण स्वरसप्तकम्।
मूर्छनाशब्दवाच्यं हि विज्ञेयं तद् विचक्षणैः।।

अर्थात् सप्त स्वरों के क्रमपूर्वक आरोहावरोह करने (की क्रिया) को मूर्छना शब्द द्वारा जाना जाता है। मतंग मुनि ने षड्ज तथा मध्यम, दो ग्रामों से कुल चौदह मूर्च्छनाएँ मानी हैं–

एवं तावदुभयग्रामिक्यश्चतुर्दश मूर्छनाः सम्पूर्णाः कथिताः।

मतंग मुनि ने इन सभी चौदह मूर्च्छनाओं के नाम तथा उनके आरम्भिक स्वर, भरत मुनि के समान ही वर्णित किए हैं। मतंग मुनि ने सभी मूर्च्छनाओं के स्वरूपों का भी विस्तृत वर्णन किया है।

७.संगीत मकरंद में मूर्च्छना उल्लेख

मतंग मुनि के समान ही संगीत मकरंद ग्रन्थ में नारद ने क्रम से सात स्वरों का आरोह व अवरोह करने के लिए 'मूर्च्छना' संज्ञा प्रयुक्त की है तथा कहा है कि वे दो ग्रामों में सात–सात कुल चौदह हैं–

क्रमात्स्वराणां सप्तानामारोहच्श्रावरोहणम्।
मूर्छनेत्युच्यते ग्रामद्वये ताः सप्त सप्त च।।

यद्यपि इस मत में मकरंदकार नारद ने दो ग्रामों से चौदह मूर्च्छनाओं की ही गणना की है तथापि उन्होंने संगीत मकरंद में तीन ग्रामों की कुल इक्कीस मूर्च्छनाओं का वर्णन किया है। मकरंदकार नारद ने षड्ज तथा मध्यम ग्राम की मूर्च्छनाओं का उल्लेख भरत मुनि के समान ही किया है –

अथ षड्जग्रामस्वराः स रि ग म प ध नि।
षड्जे तूत्तरमंद्रादौ रंजनी चोत्तरायता।
शुद्धषड्जा मत्यरीकृदश्वक्रांताभिरूद्गाता।।
मध्यमग्रामस्वराः म ग रि स नि ध प।
सौवीरी हरिणाश्वा च स्यात्कल्लोपनता यता।
शुद्धमध्या तथा चैव मार्गी, पौरवी तथा।।
क्रमात्सप्तस्वरा ह्येते मध्यमग्रम संश्रिताः।
हृष्यकांतेति विज्ञेया मध्यमग्रामसुस्वराः।।

यहाँ यद्यपि नारद ने पूर्वाचार्यो के समान ही मतोल्लेख किया है तथापि मध्यम ग्राम की मूर्च्छनाओं का उल्लेख करते हुए प्रथमा, पंचमी, षष्ठी तथा सप्तमी मूर्च्छनाओं के नाम उन्होंने किंचित अंतर के साथ वर्णित किए हैं। जहाँ अन्य आचार्यो ने इन्हीं मूर्च्छनाओं को क्रमशः सौवीरी, मार्गी, पौरवी तथा हृष्यकांता कहा है। इसके अतिरिक्त मकरंदकार ने किसी मूर्च्छना का स्वरूप वर्णन नहीं किया है तथापि उपरोक्त मत में ही उन्होंने षड्ज तथा मध्यम ग्रामों के स्वरों का उल्लेख किया है। इस उल्लेख में भी एक विसंगति दिखती है। मकरंदकार ने षड्ज ग्राम के स्वरों का क्रम आरोही दिया है जबकि मध्यग्रामिक स्वरों का क्रम अवरोही बताया है। इन स्वर–क्रमों में से मध्यम ग्रामिक स्वर क्रम का संबध, मध्यम ग्राम की मूर्च्छनाओं से स्थापित हो जाता है परंतु षड्ज ग्रामीय मूर्च्छनाओं को संबध, षड्ज ग्रामिक स्वर–क्रम से स्थापित नहीं हो पाता। सम्भवतः इसीलिए मकरंदकार नारद ने षड्ज ग्रामीय मूर्च्छनाओं के स्वर–क्रम का पृथक् रूप से वर्णन किया है–

मध्यस्थानस्थषड्जेन मूर्च्छनारभ्यते क्रमात्।।
अधःस्थानैर्निषादाद्यै षड्जः स्यान्मूर्च्छना भवेत्।
षड्जग्रामस्वराः सप्त कथ्यंते मूर्च्छनादिभिः।।

तात्पर्य यह कि मध्यम स्थान के षड्ज स्वर से मूर्च्छना, क्रमपूर्वक आरम्भ होती हैं। षड्ज के नीचे के स्थान में निषाद आदि मूर्च्छनाएँ स्थित होती है। इस प्रकार षड्ज ग्राम के सप्त स्वरों से सप्त मूर्च्छनाएँ होती हैं। संगीत मकरंद में प्राप्त षड्ज व मध्यम ग्रामिक मूर्च्छनाओं के वर्णन पूर्वाचार्यो के कथनों से साम्य रखते हैं परन्तु संगीत मकरंद में गान्धार ग्राम की मूर्च्छनाओं के नाम भी प्राप्त होते हैं जिनका भरतादि किसी आचार्य ने वर्णन नहीं किया है –

अथ गांधारग्रामसुस्वरा
संरा विशाला सुमुखी चिता चित्रावती शुभा।
आलापा चेति गांधारग्रामे स्युः सप्त मूर्च्छनाः।।
ग म प ध नि स रि ।

अर्थात् गान्धार ग्राम के स्वर – ग म प ध नि स रि हैं। संरा, विशाला, सुमुखी, चिता, चित्रावती, शुभा तथा आलापा गान्धार ग्राम की सप्त मूर्च्छनाएँ हैं। संगीत मकरंद में ही गान्धार ग्राम की मूर्च्छनाओं के नाम, अन्य स्थान पर निम्न प्रकार से भी दिए हैं–

नंदा विशाला सुमुखी चिता चित्रावती शुभा।
आलापा चेति गांधारग्रामे स्युः सप्त मूर्च्छना।।

इस कथन में नारद ने प्रथम मूर्च्छना को नाम 'नन्दा' बताया है जबकि पूर्व कथन में उन्होंने इसे 'संरा' कहा था। संगीत मकरंद एक अशुद्ध तथा अस्पष्ट ग्रन्थ है, अतः विद्वत जन इस ग्रन्थ के तथ्यों का सत्यापन अन्य ग्रन्थों में वर्णित, इसी ग्रन्थ के उद्धरणों माध्यम से करते हैं। इस क्रम में संगीत रत्नाकर ग्रन्थ में वर्णित, संगीत मकरंद के, गान्धार ग्राम की मूर्च्छनाओं का अध्ययन करने पर, उनके नाम कुछ शुद्ध रूप में प्राप्त हो जाते हैं –

नन्दा विशाला सुमुखी चित्रा चित्रावती सुखा।।
आलापा चेति गांधारग्रामे स्युः सप्त मूर्च्छनाः।

प. शार्ड्गदेव के अनुसार ऐसा नारद ने कहा है। इस प्रकार मकरंदकार नारद ने तीनों ग्रामों की मूर्च्छनाओं के नाम तो दिये हैं किन्तु उनके स्वरूपों का विस्तृत वर्णन नहीं किया गया है। इस विषय पर डा. (श्रीमती) एम. विजयलक्ष्मी का कथन है –

Narada of 'Samgita Makaranda' does not elaborate or mention the Murchanas with their notes. He only explains it as:

'मध्यमस्थान षड्जेन मूर्च्छनारभ्यते क्रमात्।
अधः स्थानैर्निषदाद्यै षड्जः स्यान्मूर्च्छनाक्रमात्।
मध्यमध्यममारभ्यसंवीरी मूर्च्छना भवेत्।
षड्जस्थानपरोधस्थस्वरादारभ्यते क्रमात्।'

Thus he explains that the first Murchana of shadja Grama starts with the Shadhja of Middle octave, and after that the lower note from the Shadja, i.e, 'Ni' should be taken for

the next Murchana and so on. In the same way, first Murchana of Madhyama Grama should start with the Madhyama of middle octave and should be followed by the Murchana of lower note- 'Ga' , though the sloka does not explain it properly.

८.भरत भाष्यम में मूर्च्छना उल्लेख

नान्यभूपाल ने मूर्च्छना की व्युत्पत्ति बताते हुए मतंग मुनि का ही अनुसरण किया है –

स्वराणां मूर्च्छना मूर्च्छा–धातुर्मोहे समुच्छये।
स्वरेभ्य उत्थितो नादः स्वरेष्वेवहि मूर्च्छति।।

अर्थात् स्वरों की मूर्च्छना 'मूर्च्छा' धातु से उत्पन्न होती है।, जिसका अर्थ 'मोह' है। नाद से स्वर की उत्पत्ति होती है तथा स्वर से मूर्च्छना की उत्पत्ति होती है। भरत भाष्यम ग्रन्थ मे नान्यभूपाल ने मकरंदकार के समान ही तीनों ग्रामों का सम्पूर्ण विवरण प्रस्तुत किया है। नान्यभूपाल ने तीनों ग्रामों के नाम तथा उनसे इक्कीस मूर्च्छनाओं की उत्पत्ति का उल्लेख करने के पश्चात् भरत मुनि के मत का उल्लेख करते हुए षड्ज व मध्यम ग्राम की मूर्च्छनाओं के नाम व उनके आरम्भिक स्वरों का वर्णन किया है। गान्धार ग्राम के विषय में नान्यभूपाल का कथन है कि लोक में विद्यमान न होने के कारण, भरत मुनि ने गान्धार ग्राम का उपदेश नहीं किया है तथा स्वयं वे (नान्यभूपाल) आगम के अनुसार उसका (गान्धार ग्राम) वर्णन कर रहे हैं। तत्पश्चात् नान्यभूपाल ने गान्धार ग्राम की सप्तमूर्च्छनाओं के आदि स्वरों ग, म, प, ध, नि, स तथा रि का उल्लेख किया है –

गायन्धारग्रामश्च्र भरतेनालौकिकत्वान्नोपदर्शितः।
अस्माभि श्च्रागमानुसारेण प्रदर्शितः।।
अतस्तदीयाः सप्त मूर्च्छना ग–म–प–ध–नि–स–रिषु स्वरेषु क्रमेण

नान्यभूपाल द्वारा वर्णित गान्धार ग्राम की मूर्च्छनाओं के नाम मकरंदकार से भिन्न हैं। इसके अतिरिक्त नान्यभूपाल ने इन मूर्च्छ्नाओं के स्वरों के साथ उनके देवताओं का भी उल्लेख किया है। उनके अनुसार–गान्धार स्वर की आलापा मूर्च्छना के देवता रूद्र हैं, मध्यम की विशाला के विष्णु, पंचम की षड्जा मूर्च्छना के अग्नि, धैवत की उत्तरगान्धारी के सव, निषाद की शुद्ध गान्धारी के गाव, षड्ज की नन्दिनी के .…………………, ऋषभ की तिमा (?) के गरूड़ होजा हैं। नान्यभूपाल ने गान्धार ग्राम की मूर्च्छनाएँ आरोही क्रम में वर्णित की हैं। नान्यभूपाल ने स्वमत का उल्लेख करने के पश्चात् मूर्च्छना–नाम संबधी नारद के मत का भी उल्लेख किया है –

नारदेनापि मुनिना प्रोक्ता नामान्तरे तु याः।
मूर्च्छना ग्रामभेदेन तासां नामाभिधीयते।।

तत्र षड्जग्रामे–

षड्जे तूत्तरमन्द्रा स्यादृषभे चाभिरूद्गता।
अच्श्रक्रान्ता तु गान्धारे तृतीया मूर्च्छना स्मृता।।
मध्यमे खलु सौवीरी ह्रष्यका पञचमें स्वरे।
धैवते चापि विज्ञेया मूर्च्छना तूत्तरायता।।
निषादे रजनी विद्याद् ऋषीणां सप्त मूर्च्छनाः।

अथ मध्यमग्रामे–

आप्यायनी विच्श्रदूता चन्द्रा हेमा कपर्दिनी।
मैत्री चान्द्रमसी चैव पितृणां सप्त मूर्च्छनाः।।

अथ गान्धारग्रामे–

नन्दा विशाला सुमुखी चित्रा चित्रवती सुखी।
आलापा चैव विज्ञेया देवानां सप्त मूर्च्छनाः।।

नान्यभूपाल के इस कथन का अध्ययन नारदीय शिक्षा के मतों के साथ किया जाएगा क्योंकि नारदीय शिक्षा में ऋषि, पितृ तथा देव मूर्च्छनाओं का सन्दर्भ प्रस्तुत किया गया है। इन मूर्च्छनाओं का सन्दर्भ प्रस्तुत किया गया है। इन मूर्च्छना संबधी विवरणों के अतिरिक्त नान्यभूपाल ने तीन ग्रामों की मूर्च्छनाओं के स्वर–सन्निवेशों का वर्णन किया है। इसके अन्तर्गत नान्यभूपाल ने मूर्च्छनाओं को अष्ट–स्वरी माना है –

तत्र येनैव स्वरेण तूच्छ्राये गीतानामुद्ग्राहः प्रवर्तते, तेनैव स्वरेण यदाऽपोहः समाप्तिरपि भवति, तदा 'सरिगमपधनिस' इति स्वर–सन्निवेशे सति।।

अर्थात् वहाँ जिस स्वर से गीत का उद्ग्राह (आरम्भ) होता है, उसी स्वर पर समाप्ति हाती है, (अतः) वहाँ 'सरिगमपधनिस' यह स्वर–सन्निवेश है। इसी स्वर–सन्निवेश के आधार पर नान्यभूपाल ने षड्ज ग्राम की सभी मूर्च्छनाओं का उल्लेख किया है। इसी प्रकार नान्यभूपाल ने मध्यम ग्राम के स्वर–सन्निवेश का भी वर्णन किया है –

यत्राप्युद्ग्राह–समाप्तौ मध्यम–स्वर–योगान्मपध्यानिसारिगमेति स्वर–सन्निवेशे सत्येवं रागादि (?)......................।

स्वर–सन्निवेश के अन्तर्गत ही नान्यभूपाल ने गान्धार ग्राम की मूर्च्छनाओं का भी उल्लेख किया है –

अत्राप्युद्ग्राह–समाप्तिभ्यां गान्धार–स्वर–साधारणतया 'गमपधनिसरिगे ति स्वर–सन्निवेशे सत्येवमृषभादि षड्ज(?) ऋषभान्तत्वादि–भेदेन क्रमेणैताः सप्त मूर्च्छना जायन्ते।।

नान्यभूपाल के पश्चात् पं0 शार्ड़्गदेव ने भी मूर्च्छना को परिभाषित करते हुए सप्त स्वरों के आरोहावरोह करने को **मूर्च्छना** कहा है तथा दो ग्रामों से उनकी संख्या सात–सात (कुल 14) मानी है। पं0 शार्ड़्गदेव ने दो ग्रामों–षड्ज तथा मध्यम का सम्पूर्ण वर्णन भरतादि पूर्वाचार्यो के समान किया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने नान्यभूपाल के समान की नारद मत का उल्लेख करते हुए ऋषि, पितृ व देव मूर्च्छनाओं को षड्ज, मध्यम व गान्धार ग्रामीय मूर्च्छनाओं के रूप में भी व्यक्त किया है।

६.सारांश

भारत के ज्ञात इतिहास के प्राचीनतम काल – वैदिक युग के पूर्व खण्ड में किसी भारतीय साहित्य में मूर्च्छना के उल्लेख प्राप्त नहीं होते। परंतु मूर्च्छना के सर्वप्रथम उद्धरण वैदिक युग के ही उत्तर खण्ड में रचित शिक्षा ग्रन्थों में प्राप्त हो जाते हैं। शिक्षा ग्रन्थों में तीन ग्रामों – षड्ज ग्राम, मध्यम ग्राम तथा गान्धार ग्राम के उल्लेख प्राप्त होते हैं किन्तु उनपर आश्रित रहने वाली मूर्च्छनाओं के प्रत्यक्ष प्रमाण प्राप्त नहीं होते। नारदीय शिक्षा ग्रन्थ में वर्णित ऋषि मूर्च्छनाओं से संकेत प्राप्त होते हैं कि सम्भवतः तत्कालीन संगीत में षड्ज ग्राम की पांच व मध्यम ग्राम की दो मूर्च्छनाओं का प्रचार रहा। शिक्षा ग्रन्थों के अनुसार, यद्यपि गान्धार ग्राम का लोप हो चुका था तथापि परवर्ती ग्रन्थों के उद्धरणों की पृष्ठभूमि तथा नारदीय शिक्षा में वर्णित देव मूर्च्छनाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि उत्तर वैदिक काल में गान्धार ग्राम की मूर्च्छनाओं का भी ज्ञान था।

वैदिक काल के पश्चात् सर्वप्रथम भरत मुनि ने ही षड्ज तथा मध्यम ग्राम की मूर्च्छनाओं का पूर्ण व स्पष्ट वर्णन किया जिसका परवर्ती ग्रन्थकारों ने यथावत् अनुसरण किया है। भरत मुनि ने स्वयं मूर्च्छना को सप्तस्वरा बताया है किन्तु उनके शिष्य दत्तिल ने पांच स्वर व छः स्वर युक्त मूर्च्छना के सिद्धांत का प्रतिपादन किया है जिसे कुछ परवर्ती विद्वनों ने भी अपने ग्रन्थों में वर्णित किया। परंतु यह मत अधिक प्रचार में नहीं रहा। तत्पश्चात् मतंग मुनि ने बृहद्देशी ग्रन्थ में द्वादशस्वर मूर्च्छनावाद का प्रतिपादन किया जो उनके ग्रन्थ की विशेषता है परंतु यह मत भी प्रचलित नहीं हुआ। साथ ही बृहद्देशी में षड्ज व मध्यम ग्रामिक मूर्च्छनामण्डल भी दिए गए हैं। मतंग मुनि के पश्चात् संगीत मकरंद तथा भरतभाष्यम् ग्रन्थ में गान्धार ग्रामिक मूर्च्छनाओं के उद्धरणों से भान होता है कि तत्कालीन संगीत में सम्भवतः गान्धार ग्रामिक मूर्च्छनाओं का प्रचार रहा, जो इन ग्रन्थों के वैशिष्ट्य को भी दर्शाता है। भरतभाष्यम् प्रथम ग्रन्थ भी है जिसमें उत्तर वैदिक कालीन देव, पितृ तथा ऋषि मूर्च्छनाओं का सम्बन्ध क्रमशः गान्धार, मध्यम व षड्ज ग्राम की मूर्च्छनाओं से जोड़ा गया है। इस मत का अनुसरण कुछ आधुनिक संगीतज्ञ भी करते हैं। परंतु यह मत असंगत ही है।

भारतीय इतिहास के मध्य काल के प्रारम्भ में ही संकेत प्राप्त हो जाते हैं कि उस काल तक आते आते बाहरी संस्कृतियों के प्रभाव में आकर भारतीय संगीत की विलक्षण विधा – मूर्च्छना गायन पूर्णतया लुप्त हो गई। यद्यपि अनेक मध्यकालीन ग्रन्थों में मूर्च्छनाओं के वर्णन प्राप्त होते हैं परंतु व्यवहारिक संगीत में मूर्च्छना का प्रयोग समाप्त हो चुका था तथा नवीन शैली – राग गायन का बहुप्रचार हो चुका था। ग्रन्थकार केवल प्राचीन भारतीय सांगीतिक संस्कृति से राग गायन को जोड़े रखने के लिए अपने रागों को मूर्च्छना से सम्बद्ध कर वर्णित करते रहे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

१. नारदीय शिक्षा –नारद मुनि–भट्ट शोभाकर–श्रीपीताम्बरापीठ सस्कृत परिषद, दतिया
२. नारदीय शिक्षा में संगीत–मनीष डंगवाल–राज पब्लिकेशन, नई दिल्ली
३. नाट्यशास्त्र–भरत मुनि–एम. रामकृष्ण कवि–ओरिएन्टल इंस्टिट्यूट, बड़ौदा
४. नाट्यशास्त्र–भरत मुनि–श्री बाबूलाल शास्त्री–चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी
५. बृहद्देशी–मतंग मुनि–बालकृष्ण गर्ग– संगीत कार्यालय, हाथरस
६. संगीत मकरदं –नारद–गायकवार्ड सिरीज
७. संगीत मकरंद–नारद–लक्ष्मीनारायण गर्ग–संगीत कार्यालय, हाथरस
८. भरत भाष्यम्– नान्यभूपाल–चैतन्य पुण्डरीक देसाई–इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़
९. संगीत रत्नाकर–पं. शार्ङ्गदेव–आनन्दाश्रम संस्कृत ग्रन्थावली
१०. भारतीय संगीत का इतिहास–डॉ0 शरच्चन्द्र श्रीधर परांजपे–चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
११. भारतीय संगीत का इतिहास–डॉ0 ठाकुर जयदेव सिंह–संगीत रिसर्च अकादमी, कलकत्ता
१२. संगीत बोध–डॉ. शरच्चन्द्र श्रीधर परांजपे–म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल
१३. Sangita Ratnakara-Sarangadeva-Pt. S.S. Sahtri-The Adyar Library and Research Center, Madras.
१४. Brhaddesi of Matanga Muni-Prem Lata Sharma-I.G.N.C.A., New Delhi .
१५. Nardiya Siksa-Narada Muni-Usha R. Bhise-Bhandarkar Oriental Research Institute, Pune .
१६. A critical Study of Sangita Makaranda-Dr.(Mrs.) M. Vijay Lakshmi-Gyan Publication House, New Delhi .